संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०२६
वर्ष : ३५ अंक : ८ (निरंतर अंक : ३९८)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

होली अगर हो खेलनी, तो संत सम्मत खेलिये ।
संतान शुभ ऋषि-मुनिन की, मत संत आज्ञा पेलिये ।।

निर्दोष हैं बापूजी । मैं और पूरा संत-समाज बापूजी के साथ है ।

- महामंडलेश्वर स्वामी रामेश्वरानंद सरस्वतीजी

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का अकाट्य महासंकल्प

(३ दिसम्बर १९९८ के सत्संग से)

“हम इन्हीं आँखों से भारत को फिर से चमकता देखेंगे !”

लखनऊ में मेरा सत्संग था, उसमें अटलजी आये थे। उन्होंने वातावरण की बात की और थोड़ा जाहिर में भी कहा : “मैं निराश हो गया था लेकिन बापूजी से मिलने के बाद कुछ आशा की किरण आयी।...” (लखनऊ सत्संग में पधारे श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के उद्गार जानने हेतु पढ़ें साहित्य ‘दिव्य प्रेरणा-प्रकाश’ ★ पृष्ठ ४१)

तो मैंने उनका कंधा हिलाकर कहा : “मैं तुमको फिर से प्रधानमंत्री देखना चाहता हूँ।” (फिर वे प्रधानमंत्री बने, लगभग १३ महीने रहे और फिर तीसरी बार अपना कार्यकाल भी पूरा किया।)

यह आप लोगों को पता है। ऐसे ही भारत को कहता हूँ कि **“मेरे भारत ! ओ मेरे भारत ! ओ मेरे देश ! मैं तुझे फिर से विश्वगुरु देखना चाहता हूँ। ॐ ॐ ॐ...”**

और यह मेरा स्वप्न भाषणकर्ताओं जैसा भाषण नहीं है, बिल्कुल साकार हो के ही रहेगा। ऐसा नहीं कि चलो यह काम करते-करते मर जायेंगे, दूसरा जन्म लेकर आयेंगे अथवा सूक्ष्म शरीर से भारत को ऐसा बनायेंगे, नहीं... **इसी शरीर से, इन्हीं आँखों से भारत को फिर से हम चमकता देखेंगे ! बिल्कुल देखेंगे !**

आप लोग मन-ही-मन जपो : **‘ॐ शांति, ॐ आनंद... ॐ शांति, ॐ आनंद...** भारत फिर से विश्वगुरु बनकर ही रहेगा ! भारत थोड़े ही वर्षों में चमकेगा। हाँ, बिल्कुल पक्की बात है ! हाँ, चमकेगा !...’ बस, आकाश में संकल्प की तरंगें डाल दो। प्रकृति अपने-आप वातावरण बनायेगी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय... जो सबमें बस रहा है, वह भगवान मेरा आत्मा है। जो सबका आधार है वह ॐ। सत्यस्वरूप भगवान बुलवा रहे हैं और भगवान का संकल्प भगवान ही पूरा करेंगे। हाँ, भारत बिल्कुल चमकेगा ! जो भारत को खंड-खंड करने के स्वप्न देख रहे हैं, उनके ये दिवास्वप्न सफल नहीं होंगे ! परंतु भारत के संतों के संकल्प बिल्कुल सफल हो के ही रहेंगे ! ओऽम्, हरि ओऽम् !... ऐसा मेरे गुरुजी का प्रसाद मेरे पास है ! जब कैदी बदल सकते हैं, चम्बल की घाटी के लोग बदल सकते हैं तो फिर ये भारतवाले बदलकर विश्वगुरु के अपने पूर्व गौरव तक पहुँचें, इसमें क्या बड़ी बात है !

यह देश अनाथ नहीं है। इस देश का नाथ बिल्कुल संतों के हाथ है। संतों का हृदय उसको पसंद है और उसकी करुणा-वरुणा संतों को पसंद है।

हमारी मोहब्बत का कोई और ही अंदाज है। हमारी प्रीति का कोई और ही अंदाज है।
हमारी दोस्ती का कोई और ही अंदाज है। हमें उस पर नाज है तो उसे भी हम पर नाज है ॥

हमें उस प्यारे प्रभु पर गर्व है और प्रभु को हम पर भी तो गर्व है कि ‘मेरा है’।

★ यह संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है।

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

अध्यासों को हटा के आत्मा की झलकें पाने का अवसर देनेवाला पर्व

"होली"

२ से ४ मार्च : होलिकोत्सव पर विशेष

होलिकोत्सव सचमुच अनेक में एकत्व की खबर देता है । एक ही आह्लाद, आनंद... । सेठ का सेठपना, राजा का राजापना, अमीर का अमीरपना, गरीब का गरीबपना सब छू हो जाता है – रंग छिड़कने में, हास्य-आनंद में । बाहर की चीजें, पद पाकर अपने में बड़प्पन का भूत घुसता है अथवा इनके न होने से अपने में दीनता-हीनता घुसती है । यह व्यर्थ है । वास्तव में तुम्हारा स्वरूप दीन-हीन भी नहीं है और बड़प्पन के अहंकारवाला भी नहीं है । जो प्रह्लाद की असलियत है वही तुम्हारी है, जो ब्रह्मा-विष्णु-शिवजी की असलियत है वही तुम्हारी असलियत है और जो कीड़े-मकोड़े की असलियत है वही तुम्हारी है । मकोड़े में चेतना, ज्ञान है कि नहीं ? है । तो जो सत्, चित्, आनंद है वह सर्वव्यापी सबमें ज्यों-का-त्यों है और मनुष्य-जीवन उस महानता का अनुभव करने के लिए है ।

अभ्यास से अध्यास को हटाओ

होलिकोत्सव में अमीरी-गरीबी का, जात-पात का अध्यास सब छू हो जाता है । 'हो ली' जो हो गया, हो गया ।

होली आयी रे...
फागणियो आयो रे...

धम धमा धम !... ऐसा-वैसा करके थोड़ी हँसी-कूद करके अध्यासों को हटा के, अध्यासों को भूलकर अनजाने में अपने निर्दोष आत्मा की झलकें पाने का अवसर यह होलिकोत्सव है । ऐसे ही खेलकूद में भी अध्यासों को भुलाकर हँसते-खेलते हैं । खेलकूद में से आनंद थोड़े ही टपकता है ! अध्यासों को भूलते हैं उस समय चित्त तदाकार होता है तो अपने आत्मदेव की, अंतरात्मा की झलक आती है । वास्तव में न वाहवाही में मजा है, न पैसे में मजा है । मजा तो तुम्हारे आत्मदेव में है, तुम्हारे में ही मजा है, तुम ही मधुस्वरूप हो । निर्दोषता से खेलते हैं न होली तो जो आनंद आता है वह कहाँ से आता है ? तुम्हारे अंतरात्मा का ही तो है ।

'हो ली' जो बीत गया उसको याद करके फँसो नहीं । भूतकाल में मत जाओ, राग-द्वेष मत करो, भविष्य का भय मत करो, वर्तमान में आसक्ति करानेवाले अध्यास को काटो बस ! भूतकाल गया तो गया उसको क्या याद करना, भविष्य अभी आया नहीं उसका क्या भय करना और वर्तमान चल रहा है, हर सेकंड बदलाव में बीत रहा है – ऐसी समझ बढ़ाओगे तो अध्यास की रीढ़ टूट जायेगी । रीढ़ की हड्डी टूटने से क्या होता है ? तौबा हो जाती है । तो मुख्य जो है अध्यास उसको हटाना है । परमात्मा की सत्यता, चेतनता, आनंदत्व का अभ्यास बढ़ाकर राग-द्वेष का अध्यास, 'मेरा क्या होगा ?' इस बेवकूफी का अध्यास – इनको कमजोर करो । ज्ञान, ध्यान, सत्कर्म के अभ्यास से अध्यास को ढीला करो । अभ्यास से अध्यास को हटाओ ।

ऋतु-परिवर्तन का उत्सव

होली ऋतु-परिवर्तन का उत्सव है, प्राकृतिक उत्सव है । अब सूर्य की किरणें धरती पर सीधी पड़ेंगी, गर्मी बढ़ेगी, कफ, चरबी आदि पिघलेंगे तो उसके लिए तुम्हारा शरीर, मन, बुद्धि तैयार

नम्रता व सरलता की दिव्य मूर्ति : साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

१३ मार्च को ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का प्राकट्य दिवस है । परमात्मा के साथ अठखेलियाँ करनेवाले इन महापुरुष में नम्रता व सरलता गजब की थी ! इसी संदर्भ में साँईंश्री के जीवन का एक प्रसंग पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के प्राकट्य दिवस पर विशेष

मेरे गुरुदेव साँईं श्री लीलाशाहजी, जिनके आदेश मात्र से रेलगाड़ी खड़ी हो सकती थी, पेड़ चल सकता था, ऐसे महापुरुष नैनीताल में जब घूमने जाते तो पत्थर इकट्ठे करते । मैं भी गुरुजी के पीछे-पीछे जाता था तो गुरुजी के साथ मैं भी पत्थर इकट्ठे करता और उन्हें सीमेंट की बोरी में भर के जैसे डोटियाल (पहाड़ी क्षेत्रों में सामान ढोने का काम करनेवाले मजदूर/कुली) करते हैं ऐसे हम ऊपर आश्रम में ले के जाते थे और अपने हाथों से झोंपड़ी बनाते थे कि 'आनेवाला कोई साधक रहेगा ।' ऐसा हमने किया है । वे पत्थर नहीं उठाये मानो हमने जन्म-जन्म के पाप उठाकर बाहर पहुँचा दिये । वह साधना हमको जो फली, दूसरे जिन लोगों ने सुविधा ली उनको नहीं फली । अहंकार को घिसाना है न !

एक बार इसी प्रकार साँईंजी और मैं पत्थर इकट्ठे कर रहे थे । हमारे कपड़े भी सादे थे । जबलपुर से २-३ परिवार नैनीताल घूमने को आये थे, १५-१८ लोग थे । नैनीताल में वेधशाला (observatory) है । वे लोग वेधशाला देखने गये पर रास्ता भूल गये । जहाँ हम लोग पत्थर चुन रहे थे, वहाँ से निकले । हमारा वेश देखकर उन्होंने हमें कुली समझ लिया । हमको दूर से आवाज लगायी : ''ऐ कुली ! ऐ कुली ! इधर आओ ।''

एक क्षण के लिए मेरे को मन में हुआ कि 'इनको पता नहीं, इनके जैसे तो मेरी दुकान में नौकर थे ।' साँईं लीलाशाहजी बोलते हैं : ''जी हजूर !''

अच्छा हुआ कि हम यह रास्ता भूले तो जन्म-जन्म के भटकते हुए बंदों को असली रास्ता दिखानेवाले महापुरुष के चरणों में पहुँच गये ।

अब बाप 'जी हजूर' करे तो बेटा कहाँ जाय ? तो हम भी गये । वे बोले : ''हम वेधशाला जाना चाहते हैं तो क्या हमें रास्ता दिखा सकते हो ?''

साँईं बोलते हैं : ''जी हजूर ! चलो, मैं दिखाता हूँ ।''

जो छोटा नहीं बन सकता वह बड़ा भी नहीं बन सकता । परमात्मा तो अणु से भी छोटा है और महान से भी महान है ।

अणोरणीयान्महतो महीयान् ।

(कठोपनिषद् : अध्याय १, वल्ली २, मंत्र २०)

ऐसे परमात्मा के साथ जिन्होंने तादात्म्य साध लिया है उनके लिए मान-अपमान सभी बराबर हैं किंतु मुझे मेरे सद्गुरुदेव के लिए उन लोगों के द्वारा प्रयुक्त वह भाषा मंजूर नहीं थी इसलिए मुझे तो गुस्सा आ गया : 'ऐसे महान सद्गुरु को ये मूर्ख लोग कुली कहते हैं !' फिर भी स्वामीजी की सौम्यता को देखकर मैं शांत रहा ।

आश्रम और वेधशाला - ये दोनों पास-पास की पहाड़ियों पर ही हैं । हम उन्हें रास्ता बताने चले ।

बड़ा कुली आगे और छोटा कुली पीछे और बीच में इन लोगों की कतार पगडंडी पर । बड़ा

‘निर्दोष बापूजी को मिले न्याय’ : संतों की आवाज

महामंडलेश्वर स्वामी रामेश्वरानंद सरस्वतीजी : निर्दोष हैं बापूजी । मैं और पूरा संत-समाज बापूजी के साथ है ।

दुर्भाग्य है इस देश का कि जिन्होंने युग-परिवर्तन हेतु अनेक कार्य किये, जिन्होंने लाखों लोगों को धर्मांतरित होने से बचाया, घर वापसी करायी, उन्हीं बापू को एक षड्यंत्र के तहत झूठे केस में हिरासत में लिया गया । वे आज भी एक क्रांति बनकर राष्ट्र को संदेश दे रहे हैं । बापूजी ने इतना बड़ा कार्य किया कि वे अमर हो गये, चंद समय में ही भारत को ऊँचाई पर ले के गये । ऐसे राष्ट्रप्रेमी को ऐसी वेदना सहनी पड़ती है यह देश का दुर्भाग्य है !

बापू ने समाज को सुरक्षित करने, राष्ट्र को समृद्ध व सम्पन्न बनाने और हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए जो काम किया उसका मैं साक्षी हूँ । मुझे विश्वास है कि वे एक दिन निर्दोष साबित होंगे । मंगल कामना है भगवान आशुतोष से कि उनका स्वास्थ्य ठीक रहे । **समाज, धर्म और राष्ट्र को ऐसे ऋषिरूप संतों की आवश्यकता है ।**

महंत साध्वी डॉ. राधा गिरिजी, श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा : संत आशारामजी बापू ने करोड़ों लोगों को सनातन धर्म की तरफ अग्रसर किया है । जिसे इंटेलिजेंस एजेंसियाँ नहीं रोक पायीं, जिस पर राजनेता ज्यादा गहराई से कार्य नहीं कर पाये, बहुत-सी संस्थाओं को कानों-कान जिसकी भनक तक नहीं हुई, उस धर्म-परिवर्तन को बापूजी ने देश के कोने-कोने में रोका और रोक ही रहे हैं ।

आजकल लड़की का केस बहुत आसान तरीके से लग जाता है । मसला क्या होता है वह लोग आंतरिक रूप से नहीं जान पाते । ईसाइयत को रोकने के लिए जो लोग काम करते हैं, सीधा उन पर अटैक किया जाता है । बापूजी के ऊपर सीधा अटैक किया गया है । यह आस्था को खत्म करने का प्रयास है ।

इन १३ सालों का हिसाब कौन देगा ? वह अमूल्य वक्त लौटकर नहीं आ सकता । उसकी भरपाई तो की नहीं जा सकती है ।

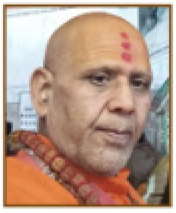

महंत श्री विश्वापुरीजी, जूना अखाड़ा; अध्यक्ष, महाशक्ति पुंज सेवा ट्रस्ट : आशारामजी ने जो अच्छे काम किये उनकी कभी किसीने तारीफ नहीं की । उन्होंने सनातन धर्म के देवताओं को आगे बढ़ाने की, सनातन धर्म को आगे ले जाने की कोशिश की । उन्होंने गुरुकुल खोले, आश्रम चलाये, लोगों को शिक्षा-दीक्षा दी, गरीबों-आदिवासियों में अन्न-वितरण किया । वे पहले महात्मा हैं जिन्होंने किसीकी गलत बात नहीं मानी ।

महंत सूर्यांश मुनिजी : आध्यात्मिक स्तर पर आशारामजी बापू ने बहुत अच्छा कार्य किया है । आत्मा से परमात्मा को जोड़ने का कार्य उन्होंने बहुत व्यापक स्तर पर किया है ।

हम बिना सोचे संतों पर आरोप स्वीकार कर लेते हैं यह ठीक नहीं है । हम लोगों को भी पता है कि बापूजी सही हैं । षड्यंत्रकारियों का मुख्य मकसद है हमारी संस्कृति को नष्ट करना ।

सरकार को भी सोचना चाहिए कि जिन्होंने इतने बड़े स्तर पर हिन्दुओं को जगाने का, आदिवासियों के धर्म-परिवर्तन को रोकने का कार्य किया, ऐसे संत को आप जेल में डाल दे रहे हैं, यह ठीक नहीं है ।

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता) ❒

ग्रहण के विनाशकारी प्रभाव से कैसे बचें और कैसे इसका लाभ उठायें ?

३ मार्च को खग्रास चन्द्रग्रहण है । ग्रहण के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण – ये पृथ्वी पर रहनेवाले जीवों के लिए बड़े विकट दिन होते हैं । चन्द्रग्रहण के समय स्वास्थ्य की रक्षा के लिए भोजन ग्रहण से ९ घंटे पहले कर लेना चाहिए । परंतु जो बालक, बूढ़े, बीमार व गर्भवती स्त्रियाँ हैं वे ग्रहण से १.५ प्रहर (४.५ घंटे) पहले तक चुपचाप कुछ खा-पी लें तो चल सकता है ।

ग्रहणकाल में रह गया भोजन ग्रहण के बाद खाया नहीं जाता अतः ग्रहण के पूर्व ही भोजन का सदुपयोग कर देना चाहिए । हो सके तो ग्रहण के समय खाली पेट रहें, उपवास जैसा रहें तो और भी अच्छा है । जो अपरिहार्य हैं, जिन्हें फेंकना असम्भव है, उन खाद्य पदार्थों को अच्छी तरह से बंद करके रखना चाहिए और सूतक (ग्रहण-वेध) के पहले उनमें कुश, तुलसी या तिल रख देना चाहिए ताकि ग्रहण के वातावरण का प्रभाव उन पर न पड़े ।

वे भाग्यशाली हैं जो ग्रहण के समय हलका व्यवहार न करके प्राणशक्ति के उद्गम-स्थान भगवान के नाम का सुमिरन, जप, दान, ध्यान करते हैं।

ग्रहण के बाद नहा-धो के स्वच्छ होकर भोजन आदि करना चाहिए । चन्द्रग्रहण हुआ है तो चन्द्रग्रहण छूटने के बाद अगर चन्द्रमा साफ नहीं दिखता तो उस समय आहार आदि नहीं लें ।

ग्रहण के समय अगर किसीको थोड़ी भी चोट लगे तो वह ज्यादा नुकसानकारक होती है । सर्प-दंश और बिच्छू-दंश बड़ा खतरनाक होता है, बहुत गहरा असर करता है ।

ग्रहण के समय चोट आदि से शरीर को कोई भी हानि नहीं हो । हो सके तो मन में भी कोई उद्वेग न हो इसका खयाल रखना चाहिए । बड़े-में-बड़ा ग्रहण है कि अपने स्वरूप को, अपने आत्मप्रकाश को अविद्या और कल्पनाओं ने ढक रखा है । उस अविद्या और कल्पनाओं को हटाने के लिए ग्रहण के समय सत्संग, सत्संग का विचार, जप और ध्यान अत्यंत आवश्यक हैं ।

गर्भिणी हेतु सावधानी

ग्रहण के समय गर्भिणी स्त्री सूर्य या चन्द्र का दर्शन न करे और शयन न करे । ग्रहण के समय पैर पर पैर रख के एक गर्भिणी लेट गयी तो उसकी बच्ची को जो विकृति हुई वह हमने देखी है । जिलाधीश की बच्ची थी, उसके एक पैर में ऐसी तकलीफ थी कि मैं कह नहीं सकता हूँ । जिलाधीश की पत्नी ने अपनी बेटी का पैर दिखाया ।

मैंने कहा : ''तुम ग्रहण के समय पैर पर पैर रखकर सोयी होगी ?''

वह दंग रह गयी, बोली : ''हाँ, बिल्कुल सच्ची बात है ।''

तो ग्रहणकाल में गर्भिणी को शयन करना या इधर-उधर की चेष्टा करना ठीक नहीं ।

...तो ग्रहण मंगलकारी बन जायेगा

चन्द्रग्रहण के समय भगवद्भजन करो तो भजन एक लाख गुना फल देगा । यदि गंगाजल पास में हो तो एक करोड़ गुना फल देगा । इस समय जप न करने से मंत्र को मलिनता प्राप्त होती है । अतः इधर-उधर की हरकतों से बाज आकर पवित्र रहो, ग्रहणकाल का सदुपयोग करो । बस, फिर आपका भी मंगल, आपके घर में आनेवालों का भी मंगल, घर में रहनेवालों का भी मंगल !

ग्रहण के समय प्राणऊर्जा की थोड़ी कमी

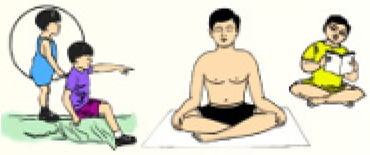

विद्यार्थी संस्कार

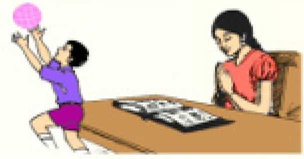

भगवद्भक्ति मरने के बाद भी नष्ट नहीं होती – पूज्य बापूजी

मैंने सुनी है कथा । एक क्षुद्र बालक जिसके माँ-बाप कोई थे नहीं, भटकता-भटकता भूखा-प्यासा किसी सरोवर के किनारे पहुँचा । सरोवर में उसने स्नान किया और पानी से ही अपनी भूख मिटायी । उसे उस सरोवर के बीच शिवलिंग दिखा । उसने सरोवर में से ही कमल तोड़कर उस शिवलिंग पर चढ़ाये । फिर शिव-पूजा करके जा रहा था, भूख के कारण चक्कर खा के गिरा और उसके प्राणों का अंत हो गया ।

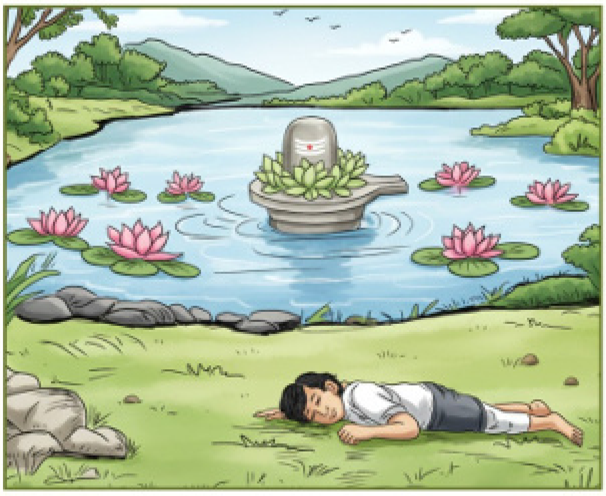

व्यक्ति जैसा चिंतन करता है वैसे उसकी बुद्धि में संस्कार पड़ जाते हैं । तो अंत समय शिव-पूजन के संस्कार उसमें पड़ गये थे, चिंतन करते-करते उसके प्राण निकले । जीवनभर तो उसने कोई सत्कृत्य किया नहीं था, अंत समय में एक ही बार किया हुआ शिव-पूजन उसके स्मरण में रहा । दूसरे जन्म में वह किसी ब्राह्मण के घर जन्मा । दैवयोग से उसे वह स्मृति बनी रही । उसने सोचा कि 'यहाँ चतुराई करूँगा तो लोग संसार में बाँध देंगे ।' तो जड़भरतजी की तरह सब जानते हुए भी वह बुद्धू जैसा जीने लगा ।

माँ-बाप उसे लोकाचार सिखाते, लौकिक रीतभात (रीति-रिवाज) के अनुसार ढालना चाहते थे किंतु उसका मन पूर्व-अभ्यास के बल से जहाँ लगना चाहिए उधर ही लगता था । रात्रि को उठ जाता और घर से दूर एक शिवालय में जाकर बैठ जाता । प्रभात होता तो चुपचाप अपने बिस्तर पर आ के सो जाता ।

आखिर कुटुम्बियों ने उसे निकम्मा समझा । स्वार्थी संसार की यह रीति है कि जो जितना काम में आता है उतना उसको प्यार मिलता है और जो काम में नहीं आता उससे घृणा करते हैं ।

कुटुम्बियों ने उससे घृणा की और डाँटा कि ''कुछ कमाता नहीं, कुछ करता नहीं, हमारा कहना मानता नहीं तो फिर घर में क्यों रहता है ? इससे मर जाय तो अच्छा ।''

वह ब्राह्मण कुमार भीतर से बड़ा खुश हुआ कि 'छुट्टी माँगनी नहीं पड़ी, अपने-आप छुट्टी मिल गयी ।' घर से चला, पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा । वहाँ उसे शिव-पूजा में मन लगे ऐसा वातावरण मिला । शिव-पूजन करते उसके दिन बीतने लगे । उसके मन में यह रहता था कि 'अधिक-से-अधिक कमल चुनूँ और शिवजी को अर्पण करूँ ।'

अब अर्पण करते-करते कर्तृत्व को अर्पण करना होता है । भगवान शिवजी कमलों के, पानी के लोटे के या बिल्वपत्रों के भूखे नहीं हैं । हम लोगों की जो पकड़ है वह हमें दोबारा संसार में ले आती है । इसीलिए पकड़ छोड़ने की आदत डालने के लिए देव को कुछ अर्पण किया जाता है । देव को कुछ अर्पण करने की भावना होती है तो तुम्हारा चित्त शुद्ध होता है और देव प्रसन्न होते हैं ।

शारीरिक शादी के साथ आत्मिक शादी भी हो

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

भगवान कहते हैं :

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥

'हे भरतश्रेष्ठ ! प्राणियों में जो धर्म से अविरुद्ध काम है वह मैं हूँ ।' **(गीता : ७.११)**

धर्म से अविरुद्ध (शास्त्र के अनुकूल) जो काम है, वह तो मेरा स्वरूप है, उसीसे सृष्टि चलती है । लेकिन मोह से अगर संबंध जोड़ते हैं तो वे पति-पत्नी जरूर एक-दूसरे के लिए शत्रु होते ही हैं । शादी का एक अर्थ होता है खुशी । 'शादी' का मतलब सच्ची खुशी के द्वार खोलने के लिए एक-दूसरे को सहयोग करना । शारीरिक शादियों के साथ-साथ आत्मिक शादी भी होनी चाहिए । हस्तमिलाप हो जाय, पति-पत्नी एक-दूसरे को हार डाल दें... हो गयी शादी ? नहीं, उसके साथ-साथ आत्मिक लग्न का विधान है ।

फेरे फिरते हैं तो कई समाजों में यह रिवाज है कि ३ फेरों में वरराजा आगे होता है तथा दुल्हन पीछे होती है और बाकी के ४ फेरों में दुल्हन आगे होती है तथा वरराजा पीछे होता है । दुल्हन माने बुद्धि, वरराजा माने मन । पहले तो मन आगे-आगे चले परंतु बुद्धि ऐसी तीव्र हो कि मन से भी आगे निकले अर्थात् पति पत्नी का मार्गदर्शन करे और पत्नी पति का मार्गदर्शन करे और जन्म-मरण के फेरे से पार हो जायें इसलिए फेरे फिरने होते हैं । जन्म-मरण के फेरे मिटाने में एक-दूसरे के लिए उपयोगी हों इसलिए फेरे फिरते हैं । पर यह तो भूल गये, चलो पार्टी करो, फलाना करो... करो-करो में मर गये सब ।

तो पत्नी पति की हितैषी हो और पति पत्नी का हितैषी हो । जो शारीरिक संबंध बना के एक-दूसरे के शरीर को नोच-नोचकर सुखी होना चाहते हैं वे दिखते तो एक-दूसरे के मित्र हैं परंतु कट्टर शत्रु हैं । पत्नी का उद्देश्य यह हो कि पति की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक तंदुरुस्ती का विकास हो तथा पति का भी उद्देश्य यह हो कि पत्नी का शरीर तंदुरुस्त रहे, मन प्रफुल्लित रहे और बुद्धि में आत्मप्रकाश आये फिर संसार चलाने के लिए संतान को जन्म देना यह बात ठीक है ।

एक-दूसरे का हित-चिंतन करना चाहिए । एक-दूसरे को वश करने की कोशिश करते हैं तो एक-दूसरे के शत्रु हो जाते हैं । पत्नी चाहती है कि पति मेरे वश में चले और पति चाहता है कि पत्नी मेरे वश में चले । अरे, अपने मन को वश करो, पत्नी को वश किया तो क्या और पति को वश किया तो क्या ? अंत में देखो तो दोनों बेचारे घसीटे जाते हैं । शादी होती है शाद-आबाद होने के लिए परंतु आजकल की शादी तो बरबादी के चिह्न ज्यादा दिखाती है ।

मन का स्वभाव है कि जो नहीं है उसके लिए इच्छा करता है और जो है वहाँ से भागता है । कुँवारा सोचता है कि 'शादी हो जाय', शादीवाला कहता है कि 'बच्चा हो जाय', बच्चेवाला बोलता है कि 'यह हो जाय, वह हो जाय...', अंत में बोलते हैं : 'संसार में कुछ नहीं है ।' अंत में पछताओ इसके पहले श्रीकृष्ण के वचन समझ लो कि **मयि चानन्ययोगेन...** 'मेरे साथ अनन्य योग करे ।' शादी तो करो पर पत्नी में जो मेरा कृष्ण-तत्त्व है या पति में जो मेरा परमात्मा है उस परमात्मा को जगाना है, पाना है - ऐसा विचार

धर्मांतरण करने वालों की मुरादें नाकामयाब कर दें – पूज्य बापूजी

धर्मनिष्ठा - संस्कृति प्रेम

गुजरात के सुप्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री जयकृष्ण इन्द्र जब विद्यार्थी अवस्था में थे तब उनके घर में गरीबी थी और वे बड़ी कठिनाइयों से जी रहे थे । किसी इंस्पेक्टर ने उनसे कहा : ''तुम मेरे घर आना बेटे ! कपड़े फटे हैं, मैं तुम्हें कपड़े दिलाऊँगा, किताबें दिलाऊँगा, तुम्हारी सारी व्यवस्था करूँगा ।''

जयकृष्ण उसके घर पहुँचे, पुलिस इंस्पेक्टर ने कहा : ''देख, तुम हमारे धर्म में आ जाओ, धर्मांतरित हो जाओ । फिर तुम्हारी पढ़ाई का और तुम्हारी सारी व्यवस्था का खर्चा हमारे चर्च की तरफ से हो जायेगा और मैं भी तुमको हेल्प करूँगा ।''

जयकृष्ण इन्द्र जैसा गया वैसे ही उठकर रवाना हो रहा था तो इंस्पेक्टर ने कहा : ''तुम इतनी गरीबी में जी रहे हो, केवल इस भगवान को नहीं उस भगवान को मानो ।''

जयकृष्ण ने सुन रखा था कि ''जीसस १७ साल भारत में आये थे और योगियों के पास से योग सीखकर वहाँ रहे । भगवान होकर पहले पूजे गये, बाद में क्रॉस पर चढ़ाये गये थे और फिर चार सौ साल के बाद लोगों ने बाइबिल बना के धर्म का प्रचार आरम्भ किया । परंतु यहाँ तो भगवान ने स्वयं गीता गायी है और भगवान स्वयं यहाँ पधारे हैं ।''

जयकृष्ण ने मन-ही-मन सोचा कि 'कोई धर्मांतरित करता है तब ईसाई बनता है और सुन्नत करने के बाद मुसलमान बनता है लेकिन हिन्दू तो जन्मजात भगवान का बनाया हुआ है – ऐसा हिन्दू धर्म छोड़कर मैं अपने हिन्दू धर्म से विश्वासघात करके भारत माता की पीठ में छुरा भौंकने का पाप नहीं करूँगा ।'

वह गरीब विद्यार्थी जयकृष्ण इन्द्र पुलिस इंस्पेक्टर के दबाव में, प्रलोभन में नहीं आया और वह गरीबी से जूझता हुआ पढ़ा-लिखा और गुजरात में वनस्पतिशास्त्रियों में उनका बड़ा आदर होने लगा ।

आपके आत्मा में दरिद्रता नहीं है, मन में दरिद्रता आ गयी कि 'मैं गरीब हूँ', गरीब-से-गरीब में भी विश्वनियंता परमात्मा है । माइयाँ रोती हैं कि 'पति मर गया, मैं विधवा हो गयी !' अरे बहनजी, जगत का पति जीवित है तो तू विधवा कैसे ? 'बेटे अनाथ हो गये...' जगत का नाथ जीवित है तो बेटे अनाथ कैसे ? ये तो मानसिक गुत्थियाँ हैं । सर्वसमर्थ ईश्वर तो आपको मरने के बाद भी नहीं छोड़ता है । ऐसे समर्थ का सहारा लेकर आज नहीं तो कल आप ऊँचाइयों को छू सकते हैं । अगर वह गरीब, कंगाल विद्यार्थी जयकृष्ण इन्द्र इंस्पेक्टर की बातों में आ जाता और ईसाई धर्म में गिर पड़ता, अपना धर्म छोड़ देता तो उसकी आत्मा इतनी उज्ज्वल नहीं हो पाती ।

इसलिए जहाँ भी धर्मांतरण होता हो वहाँ आपका और हमारा सबका कर्तव्य है कि भारतीय

यूनेस्को ने किया भारत में मातृभाषा-आधारित शिक्षा का आह्वान

२१ फरवरी : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

हाल ही में यूनेस्को (UNESCO) ने भारत की शिक्षा-व्यवस्था पर एक प्रतिवेदन (रिपोर्ट) जारी किया, जिसमें उसने भारत में मातृभाषा-आधारित शिक्षा को सुनिश्चित करने हेतु आह्वान किया । इस प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया कि 'शैक्षणिक समानता, मानसिक विकास, सांस्कृतिक निरंतरता तथा सामाजिक समावेशिता को आकार देने में भाषा की निर्णायक भूमिका होती है । बच्चे सबसे अच्छा तभी सीखते हैं जब विद्यालय उन भाषाओं को महत्त्व देते हैं और उनका उपयोग करते हैं जिन्हें बच्चे घर पर बोलते हैं । भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता अद्वितीय है फिर भी यहाँ अनेक बच्चे आज भी ऐसी भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करते हैं जिन्हें वे ठीक से समझ ही नहीं पाते ।'

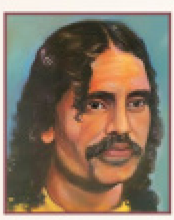

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी भी इस बात पर विशेष जोर देते थे कि स्वभाषा की उन्नति ही प्रगति का मूल है और यह संकेत देते थे कि भाषाई आत्मनिर्भरता के बिना वास्तविक बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास सम्भव नहीं हो सकता ।

अत्यंत आश्चर्यजनक है कि स्वतंत्रता के लगभग ८ दशक होने पर भी भारत में अधिकांश महाविद्यालयीन एवं बड़ी मात्रा में विद्यालयीन शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में ही दी जाती है, जिससे विद्यार्थियों के मन में अपनी संस्कृति व भाषाओं को तुच्छ मानने एवं विदेशी सभ्यता तथा भाषाओं को श्रेष्ठ मानने के विषैले संस्कारों का बीजारोपण हो रहा है ।

अमेरिका और गुरुग्राम में कार्यरत प्रसिद्ध उद्योगपति, लेखक एवं शोधकर्ता संक्रांत सानु कहते हैं : ''मैंने अभी तक ३५ से अधिक देशों की यात्रा की है । मेरे सामने सबसे अधिक चौंकानेवाले तथ्य मेरी इन्हीं यात्राओं के दौरान आये । मैंने पाया कि विश्वभर के सर्वाधिक सफल और समृद्ध देशों में बच्चों को विज्ञान, अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग), चिकित्सा और व्यावसायिक शिक्षा उनकी निजी भाषाओं में दी जाती है । ये राष्ट्र भारत की तुलना में अधिक सफल हैं क्योंकि वहाँ समूची जनसंख्या की प्रतिभा को स्थानीय भाषाओं में निखारा जाता है इसलिए प्रतिस्पर्धा से भरे विश्व में वे अपनी शर्तों पर अपना स्थान बनाये हुए हैं ।''

'इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च' में प्रकाशित लेख में भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था के ऐतिहासिक, वर्तमान एवं अपेक्षित प्रारूप पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि 'मैकाले की औपनिवेशिक दृष्टि ने भारतीय शिक्षा को इस प्रकार पुनर्गठित किया कि अंग्रेजी को प्राथमिकता मिली और संस्कृत तथा क्षेत्रीय भाषाओं का विलुप्तीकरण हो गया । स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने इस औपनिवेशिक ढाँचे को समाप्त करने के स्थान पर प्रायः उसे ही आगे

सबको भाया संस्कृति-रक्षक एवं स्वास्थ्य व पर्यावरण पोषक

तुलसी पूजन दिवस

गणमान्यों को भेंट में दिये तुलसी गमले व सत्साहित्य

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

प्राकृतिक सुगंधयुक्त, हानिरहित

धूपबत्तियाँ

अहमदाबाद आश्रम में हुए उत्तरायण ध्यान योग शिविर की झलकियाँ

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Feb 2026

ऋषि दर्शन ला रही है आपके लिए विशेष उपहार

❊ ऋषि दर्शन की १ वर्ष की सदस्यता पर पिछले ४ महीने की ऋषि दर्शन निःशुल्क प्राप्त होंगी।

❊ इसी शुल्क में आपको मिल रहा है पारिवारिक संकुल (१ में ४) : एक बार में सदस्यता लेने पर कुल ४ फोनों में ऋषि दर्शन देख सकते हैं। यानी प्रति फोन मात्र ढाई/तीन रुपये प्रति माह। अवसर न चूकें !

नया सदस्यता शुल्क

- वार्षिक : ₹ १५०
- द्विवार्षिक : ₹ ३००
- पंचवार्षिक : ₹ ६२५

आईफोन

ऐप डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

एंड्रॉइड फोन

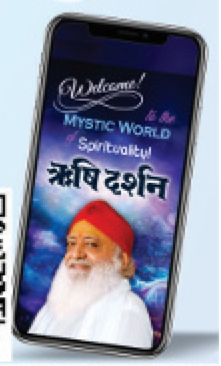

पूज्य बापूजी के श्रीचित्र एवं मंगलकारी प्रतीकों से युक्त

मंगलदर्शन चक्रिका

१ संग्रह (सेट) में पायें ६ नग (मूल्य - ₹ ६०)

❊ आज के युग में भद्दे, घटिया दृश्य न चाहते हुए भी दिख जाते हैं जो जीवनीशक्ति घटाते हैं, मन को दूषित करते हैं ऐसे में जीवनीशक्ति व पुण्य बढ़ानेवाले तथा चित्तशुद्धि करनेवाले मंगलकारी चित्र घर-दुकान की शोभा बढ़ायेंगे, साथ ही वातावरण को मंगलमय बनायेंगे। ❊ इन्हें घर, दुकान, कार्यालय या पूजा-स्थल की दीवार पर सीधे चिपकाया जा सकता है।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी